अंक - 109/2017

ISSN : 0435-1460

गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण तथा साहित्य चिंतन की त्रैमासिक शोध - पत्रिका

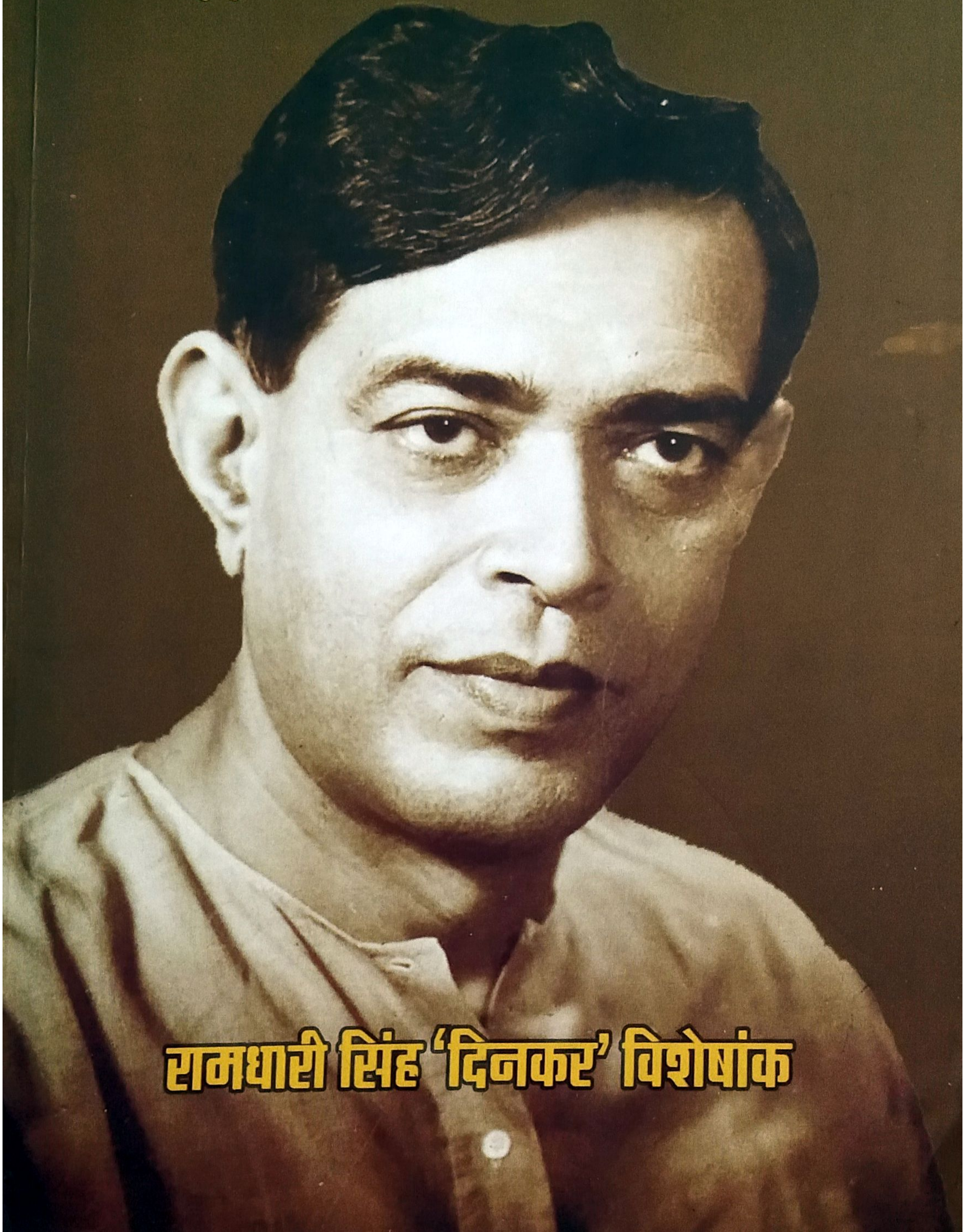

रामधारी सिंह 'दिनकर' विशेषांक

ISSN 0435-1460

संरक्षक
प्रो. कमल किशोर गोयनका
उपाध्यक्ष
केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण तथा
साहित्य-चिंतन की शोध-पत्रिका

अंक- 109 (जनवरी-मार्च 2017)

रामधारी सिंह 'दिनकर' विशेषांक

प्रधान संपादक
प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय

संपादक
प्रो. महेन्द्र सिंह राणा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा–282005

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना सभापति मिश्र 173-183
दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता ज्योति शर्मा 184-192
दिनकर की जनता आती है अखिलेश कुमार शर्मा 193-200
दिनकर काव्य में सांस्कृतिक तत्व सूर्यकांत त्रिपाठी 201-208
अंगारे और इंद्रधनुष के महाकवि 'दिनकर' दान बहादुर सिंह 209-215
कुरुक्षेत्र : विचार, संवेदना, और शिल्प आकाश भदौरिया 216-225
हिंदी निबंध के सूर्य : रामधारी सिंह दिनकर दीपक कुमार पाण्डेय 226-235
ओज, क्रांति और मूल्यबोध के कवि 'दिनकर' दिनेश चमोला 236-243
सामासिक संस्कृति के अनन्यपोषक रामधारी सिंह दिनकर
(संस्कृति के चार अध्याय का विशेष संदर्भ) राकेश कुमार दूबे 244-249
कर्ण के सत्य की असत्य व्याख्या और रश्मिरथी नृत्य गोपाल शर्मा 250-256
जीवन आनंद का कवि दिनकर राजाराम यादव 257-262
रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में भारतीय संस्कृति नवीन नंदवाना 263-275
दैनन्दिनीकार 'दिनकर' राजीव कुमार झा 276-282

इस अंक के लेखक

सदस्यता फार्म

दिनकर के काव्य में सांस्कृतिक तत्व

डॉ0 सूर्यकांत त्रिपाठी

रामधारी सिंह दिनकर का काव्य जीवन तथा जगत का काव्य है। उसमें जीवन के प्रति पूरी तरह समर्पण का भाव है, साथ ही जग के प्रति अभिन्न आस्था का भी। मानव जीवन के सतत उत्थान के द्वारा जगत का अलंकरण उनके काव्य का लक्ष्य है। मानव जीवन के उत्थान की धुरी संस्कृति है। वह मानव को एक तरफ स्वार्थपरकता, अतिलोलुपता, कामांधता सरीखी बहुशः कुप्रवृत्तियों से दूर करती है तो दूसरी ओर काम, गुगुप्सा, पुत्रेषणा जैसी उसकी प्रकृति में परिष्कार भी लाती है। काव्य संस्कृति का सशक्त माध्यम है इस हेतु कि काव्य के दो प्रमुख उद्‌देश्य हैं-

1. 'शिवेतरक्षति अर्थात् आत्म कल्याण तथा विश्व कल्याण का भाव'।
2. 'सद्यः परिनिर्वृत्ति यानी लोकोत्तर आनंद, साधारणीकरण द्वारा चित्तवृत्ति का परिष्कार एवं प्रवृत्ति का उर्ध्वीकरण।'

इन दोनों का ही जुड़ाव संस्कृति से है।दिनकर के काव्य में धरती के प्रति गहरी संवेदना के साथ ही उसके स्वर्गीकरण की भी कामना है, भौतिकवाद से जुड़ाव के साथ भी अध्यात्म का जयघोष है, मातृभूमि के प्रति भक्ति भाव

UGC Sl. No. 46977
Reg. No. 1680/2011-12
ISSN : 2272-1832

शब्दार्थ

त्रैमासिक पत्रिका

साहित्य, कला, संस्कृत और शोध की लोकधर्मी पत्रिका

अंक-17-18, संयुक्तांक, जुलाई 2017-दिसम्बर 2017

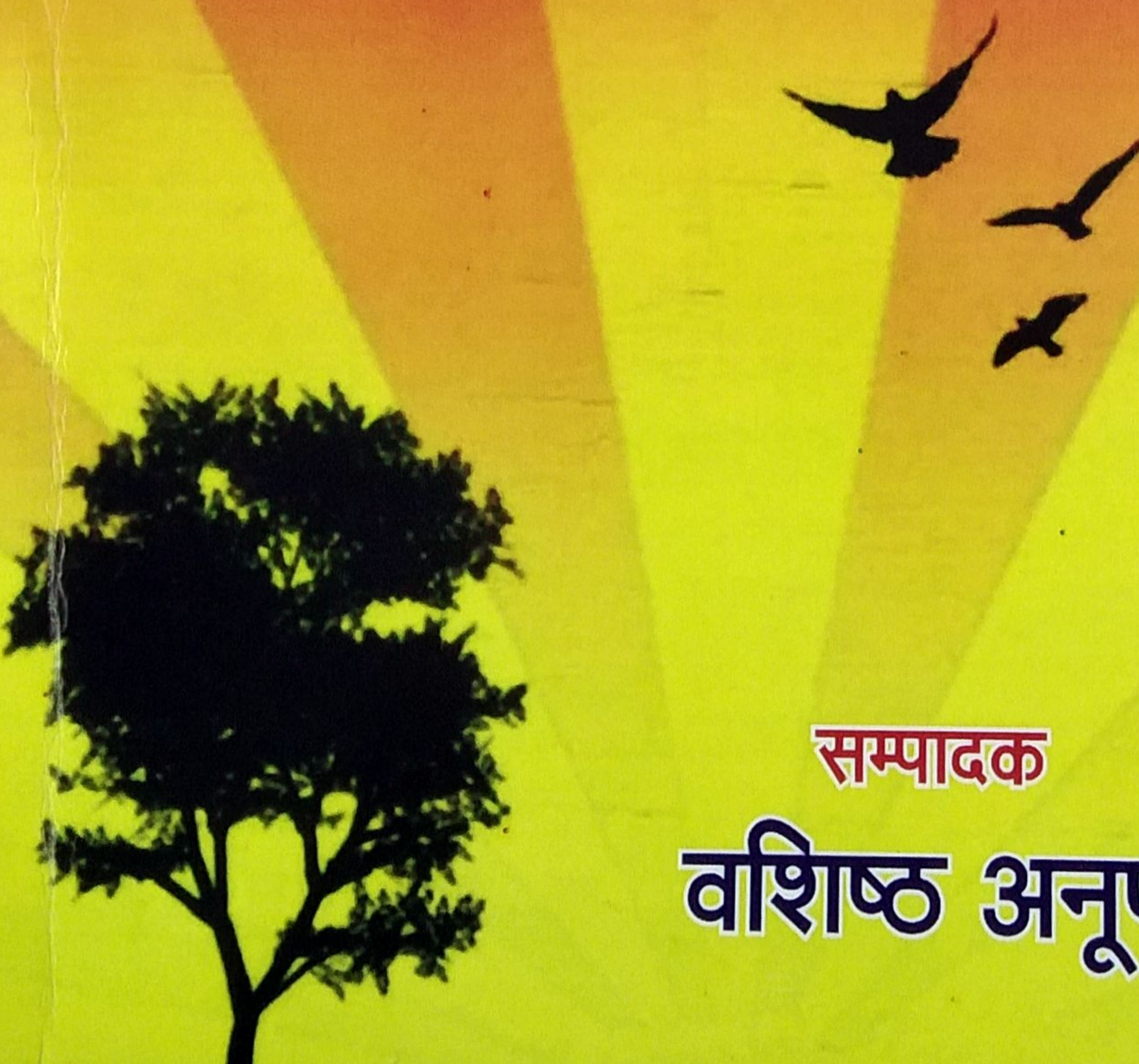

सम्पादक
वशिष्ठ अनूप

- **असंगठित क्षेत्र : भारतीय अर्थव्यवस्था का इंजन** 52–65
  विनीत कुमार तिवारी
- **प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था** 66–70
  सत्य प्रकाश
- **मिर्जापुर जिले से प्राप्त प्रागैतिहासिक चित्रों का अध्ययन** 71–74
  राकेश कुमार यादव
- **राजा की स्थिति वैदिक एवं पौराणिक काल के विशेष सन्दर्भ में** 75–80
  आलोक कुमार सिंह
- **बौद्ध धर्म में पर्यावरणीय संरक्षण के विचार** 81–84
  अखिलेश कुमार
- **गुप्तकालीन नारी : शालभंजिका रूप में** 85–89
  डॉ0 स्मिता सिंह
- **बौद्ध साधना का आध्यात्मिक आदर्श : प्रवज्जा** 90–92
  अजेन्द्र प्रताप राय
- **उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर मनरेगा के प्रभाव का अध्ययन** 93–100
  Nidhi Tripathi
- **संगीत के संवर्द्धन में दरबारी कलाकारों की भूमिका** 101–109
  रिंकी सिंह
- **महाभाष्यस्थश्लोकवार्तिकानां संक्षिप्तः परिचयः** 110–115
  धर्मराजबागः
- **लोक, शास्त्र और आदिवासी जीवन** 116–121
  डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

लोक, शास्त्र और आदिवासी जीवन

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी*

'लोक' के संबंध में पं. विद्यानिवास मिश्र की यह अवधारणा अति महत्वपूर्ण है कि "'लोक' शब्द के अर्थ जगत पर जब हम विचार करते है तो यह प्राप्त होता है कि यह शब्द 'लोक' धातु अर्थात देखने के अर्थ में प्रयुक्त धातु से निकला है। लोक का वैदिक अर्थ प्रकाश, खुली जगह, दृश्य–जगत है और उसके बाद उसका मुक्त विचरण, इसी कारण विकसित अर्थ है पूरा विश्व जो तीन अथवा सात अथवा चौदह लोको में बँटा हुआ है। उत्तर वैदिक और महाभारत काल में लोक का अर्थ हुआ–पृथ्वी लोक और उसके निवासी या फिर इसका अर्थ सामान्य जीवन, सामान्य भाषा हुआ। लौकिक का अर्थ इन्द्रियगोचर जीवन से संबद्ध हुआ। लोक के योग से अर्थ निष्पन्न हुए जिनमें लोकगीत, लोकगाथा, लोकचारित्र्य, लोकाचार, लोकतंत्र, लोकधर्म, लोक–प्रसिद्धि, लोक–मातृका, लोक मार्ग, लोक यात्रा, लोक–रंजन, लोक–बिन्द, लोक–विरूद्ध, लोक–वृत्त, लोक–संग्रह, लोक–स्थिति, लोक–हित प्रभृति शब्द है। सभी शब्दों में लोक का अर्थ व्यापक मानव–व्यवहार है या मूल्यबोध से प्रेरित स्वीकृत व्यवहार है अथवा चेतना है। ताड्य ब्राह्मण में लोकबिन्दू का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया गया है जो लोगों को स्वतंत्रता दे, खुलापन दे, खुली जगह दे और खुलेपन के लिए एक आमंत्रण दे।"(मिश्र,डॉ. विद्यानिवास मिश्र, चंदन चौक, (उ.प्र. हिंदी नाटक अकादमी, लखनऊ) की भूमिका से उदधृत)

ऐतिहासिक, भौतिकवाद के आलोक में तो हम पाते है कि जनजीवन तथा लोक संस्कृति से ही शिष्ट संस्कार होता आया है। यदि ऋग्वेद शिष्ट संस्कृति का परिचय है तो अथर्ववेद उसका पूरक होकर लोक संस्कृति का परिचायक है। अथर्ववेद के विचारों का धरातल सामान्य जीवन है तो ऋग्वेद के विचारों का धरातल विशिष्ट जीवन है। ऋग्वेद में यज्ञ–यागादि का विधान प्राप्त होता तो अथर्ववेद में जादू ,मंत्र, टोने–टोटके प्रभृति मिलते हैं। यही स्थिति उपनिषदों में भी दिखाई देती है। उनमें यदि अभिजात संस्कृति के चक्र वाले आत्मा–परमात्मा, जीव–जगत, ब्रह्म आदि के सूत्र है तो लोक जीवन, लोक विश्वास तथा लोक परम्पराओं के विवरण भी है। इसी क्रम में गुणाढ्य की 'वड्डकट्टा' (वृहदकथा), सोमदेव का 'कथा सरित्सागर', कृष्णा शर्मा के पंचतंत्र आदि लोकगाथाओं के अगाध समुद्र है।

संस्कृत वाङ्मय में 'लोक' आदि बर्बर, असभ्य या अर्धसभ्य, अविकसित, अवैज्ञानिक समुदाय अथवा वर्ग नहीं है और सर्वोच्च मौखिक परम्परा या

---

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम।

ISSN : 0975-3664 UGC : 41386 RNI : U.P.BIL/2012/43696

Year : 2017 Year : SEPTEMBER Vol. : 3

शोध - धारा

SHODH-DHARA

A UGC Listed Research Journal

Grade 'A' Impact Factor 5

शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई-जालौन (उ०प्र०) द्वारा प्रकाशित

Published by Shakshik Avam Anusandhan Sansthan

Orai (Jalaun) U.P.

२०. उच्च शिक्षा में हिन्दी साहित्य का योगदान (तुलसी के विशेष संदर्भ में)	डॉ० रीतू भटनागर	99-101
२१. भारतेन्दु की पत्रकारिता : लोकप्रियता से उपयोगिता तक	राजीव कुमार दास	102-106
२२. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा और शैली–संदर्भ	डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी	107-113
२३. भारतीय परम्परा तथा हरियाणवी लोक साहित्य में श्री हनुमान	दीपक राठी	114-119
२४. हिन्दी आलोचना के शलाका पुरूष आचार्य रामचंद्र शुक्ल	डॉ० इन्दुमती दुबे	120-123
२५. राष्ट्रीयता की गीता 'भारत–भारती'	डॉ० सतीश चतुर्वेदी, ''शाकुन्तल''	124-130
२६. राजभाषा हिन्दी : प्रयोग, प्रसार और चुनौतियाँ	डॉ० जगदम्बाप्रसाद दुबे	131-138
२७. लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिन्दी	डॉ० राजनारायण शुक्ल	139-143
२८. थर्ड जेंडर और लैंगिक अस्मिता	डॉ० विजेन्द्र प्रताप सिंह	144-164
२९. दुर्गादास : मातृभूमि के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति	देवेन्द्र कुमार गुप्ता	165-169
३०. 'सात नदियां एवं समन्दर' उपन्यास में पुरुष पात्रों की नैतिक चेतना	डॉ० प्रियंका गुप्ता	170-175
३१. मध्यवर्गीय संकीर्णता को उकेरती : चीफ की दावत	डॉ० अनिल कुमार विश्वकर्मा	176-178
३२. भारतीय हिन्दी साहित्य में समरसता के उत्स	डॉ० नरेन्द्र मिश्र	179-185
३३. स्त्री विमर्श के आइने में : कामायनी	डॉ० नवीन कुमार	186-191
३४. समकालीन हिन्दी कविता में सामजिक परिप्रेक्ष्य	डॉ० सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा	192-195
३५. महादेवी वर्मा जी के संस्मरणात्मक रेखाचित्र साहित्य में परिलक्षित उनकी मान्यताओं का एक सूक्ष्म अवलोकन	डॉ० कामिनी मट्टू	196-199
✦ विशेष		**२००-२१०**
३६. हाशिये पर टंगी जारवा जनजाति : एक विश्लेषण	श्रीमती जयाप्रभा भट्टाचार्य	200-203
३७. हिन्दी कविता में राष्ट्रीय अस्मिता के तत्व	डॉ० सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल'	204-210
✦ पुस्तक समीक्षा		**२११-२१४**
३८. कहानियों में संवेदना का वैविध्य	रविकान्त	211-212
३९. व्यतिरेकी भाषा विज्ञान की अन्य भाषा शिक्षण में उपादेयता	डॉ० माधुरी पाण्डेय ''गर्ग''	213-214

हिन्दी

ISSN : 0975-3664, RNI : U.P.BIL/2012/43696, UGC No. : 41386
SHODH-DHARA ; SEP 2017; Vol. 3; P. 107-113

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा और शैली-संदर्भ

डॉ० सूर्यकांत त्रिपाठी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, **तेजपुर, असम**

(प्राप्त : ६ जून २०१७)

Abstract

समग्र रूप से हिंदी का आत्मकथा–लेखन बहुत ही बहुरंगी है। साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों, पत्रकारों, शिक्षकों, वकीलों, समाजसेवकों, फिल्मी कलाकारों प्रभृति ने अपनी–अपनी आत्मकथाएँ लिखकर सामज में बहुरूपी बड़ा ही जीवन्त चित्र उरेहा है। प्रायः सभी आत्मकथाकारों ने पारिवारिक जीवन की अपेक्षा अपने कार्यक्षेत्र से जुड़े प्रकरणों को ही विशेष महत्व दिया है। परंतु पारिवारिक प्रकरणों का सर्वथा अभाव भी नहीं है। समूचे आत्मकथा साहित्य के पारिवारिक परिदृश्य को समवेत रूप में देखने पर यह ज्ञात होता है कि ये बहुरंगी हैं–इनमें परिवार के व्रत, उत्सव, अंधविश्वास, परंपराएँ जीवन मूल्य सभी का समावेश है। शिल्प की दृष्टि से इनमें पत्र, डायरी, संस्मरण आदि सबका सम्मिलित रूप भी प्राप्त होता है। मैत्रेयी पुष्पा की दो आत्मकथाएँ है–(१) कस्तूरी कुण्डल बसै (२) गुड़िया भीतर गुड़िया। शिल्प की दृष्टि से जब हम इन दोनों पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि इनमें वर्णनात्मक शैली की प्रधानता है। अपने अनुभूत क्षणों के आधार पर ही इन्होंने इनमें यथार्थ का अंकन किया है। कथानकों में प्रकृति चित्रण, गांव, परिवार का परिवेश–परिस्थितियाँ, पारस्परिक संबंधों, सामाजिक विकृतियों का वर्णन बड़ा ही सहज, स्वाभाविक और प्रभावोत्पादक है। भाषा सरल, सहज, प्रवाहयुक्त, लोकोक्ति एवं मुहावरों से भरपूर बोधगम्य है।

Figure : 00 **References : 26** **Table : 00**

Key Words : आत्माकथा,मैत्रेयीपुष्पा का लेखन और संवेदना

निज का जीवन–लेखन 'आत्मकथा' है, लेकिन अपने चरित्र का विश्लेषण करना आसान नहीं अपितु दोधारी तलवार है। क्योंकि यदि लेखक अपने गुणों का वर्णन करता है तो आत्म प्रशंसक कहा जाता है, यदि दोषों का उल्लेख करता है तो लोगों की श्रद्धा से वंचित होता है और यदि अपने दोषों को नज़र–अंदाज कर जाता है तो सच्चा आत्मकथाकार होने का हकदार नहीं रह जाता है।''अतः आत्मकथाएँ प्रायः बेईमानी की अभ्यास पुस्तिकाएँ प्रतीत होती हैं, क्योंकि कभी सच कहने का साहस नहीं होता है तो कभी सच सुनने का। प्रायः सच व लिहाज़ में कुछ बातें छोड़ दी जाती है तो कभी उन्हें बचा–बचाकर प्रस्तुत किया जाता है।''[१]

यह विधा जीवनी से अलग है। इसमें व्यक्ति स्वयं के बारे में लिखता है। इसका आरंभ भारतेन्दु काल से हुआ है। स्वयं भारतेन्दु ने 'कुछ जग बीती' शीर्षक से अपनी आत्मकथा लिखी। आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के अतीत का सिंहावलोकन करता है और उसमें ऐसे जीवन–संदर्भो का चयन करता है। जो उसके वर्तमान जीवन के निर्माण में योग दे चुके हैं। यदि वह लेखक है तो वह अपनी सृजन प्रेरणाओं को लिपिबद्ध करता है, यदि वह राजनेता है तो वह उन परिस्थितियों, घटनाओं पर नजर डालता है जो उसके नेतृत्व की स्थापना में सहायक बनी है। सारांशतः यह होता है कि आत्मकथाकार अपने मन में यह विचार अवश्य करता है कि 'मेरी कृति को पढ़कर पाठक को मेरी उपलब्धियों का बोध हो और